हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

Website: www.cuhimachal.ac.in

कश्मीर अध्ययन केंद्र
द्वारा आयोजित
प्रमुख संगोष्ठी एवं व्याख्यान

संवैधानिक अधिमिलन सप्ताह-2020

जम्मू-कश्मीर का भारतीय-संघ में संवैधानिक-विलय भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इसको लेकर कई तथ्य,तर्क और मिथक हैं। दुर्भाग्य यह है कि अभी तक प्रचलित तर्क और मिथक, तथ्यों को दरकिनार कर बनाए गए हैं। ऐसे समय में जब जम्मू-कश्मीर का राष्ट्र के साथ एकीकरण हर तरह से सम्पूर्णता की तरफ बढ़ रहा है, जरूरी हो जाता है कि संवैधानिक-अधिमिलन से सम्बंधित बहसों और आख्यानों को तथ्य-आधारित बनाया जाए। इसी दिशा में कदम बढ़ाते हुए हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कश्मीर अध्ययन केन्द्र ने 26 अक्तूबर 2020 से जम्मू-कश्मीर संवैधानिक अधिमिलन सप्ताह मनाया। । इसके अंतर्गत सप्ताह भर चलने वाली व्याख्यानमाला का आयोजन गया। । व्याख्यानमाला की थीम " जम्मू-कश्मीर का संवैधानिक अधिमिलन: तर्क, तथ्य और प्रक्रिया रही । लिंक निम्नवत था - https://meet.google.com/hzj-zhct-amu

Jammu-Kashmir: New Vision, New way

Centre for Kashmir Studies organised an International Scholars Symposium in collaboration with Global Think Tank 'Indian Futures' on 4th august 2021. The Title of the symposium was 'Jammu and Kashmir: New Vision, New Way.' In this symposium eminent scholars of Jammu and Kashmir participated and indicated about the emerging trends in the different field of Jammu and Kashmir. The experts emphasized that hybrid threats are new challenge for Jammu and Kashmir.

Supporting Documents:

https://www.youtube.com/watch?v=n7cQlzJii6Q

संवैधानिक अधिमिलन सप्ताह-2021

कश्मीर अध्ययन केन्द्र, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, दिनांक 22 अक्टूबर 2021 से 28 अक्टूबर 2021 तक, जम्मू-कश्मीर के संवैधानिक अधिमिलन के उपलक्ष्य में संवैधानिक अधिमिलन सप्ताह का आयोजन किया। इस बार संवैधानिक अधिमिलन सप्ताह की थीम: एकीकरण के विविध पक्ष रखा गया । इस व्याख्यानमाला में जम्मू-कश्मीर के अधिमिलन पर विशेषज्ञता रखने वाले शीर्षस्थ विद्वान सहभागिता की। व्याख्यानमाला में प्रतिदिन सायं 3.00 बजे से विषय-विशेषज्ञों का व्याख्यान हुआ। इस व्याख्यान से आपकी सहभागिता से जम्मू-कश्मीर का स्वस्थ और तथ्यपूर्ण विमर्श स्थापित करने में सहायता मिलेगी-

Supporting-Documents-

Google-Meet Link- http://meet.google.com/mpe-xwii-inv

कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के देहरा परिसर में आयोजित व्याख्यानमाला में बोले डा. आशुतोष भटनागर

संस्कृति से ही होगा जम्मू-कश्मीर का भारत से एकीकरण

सीयू में हुआ नई शिक्षा नीति पर मंथन

कश्मीर की ज्ञान परंपरा में छिपे हैं एकीकरण के सूत्र : रजनीश शुक्ल

संवाद न्यूज एजेंसी

धर्मशाला/देहरा। जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो कश्मीर को उससे अलग नहीं किया जा सकता है। संस्कृति की कोई भौगोलिक इकाई नहीं होती है। जम्मू-कश्मीर के सांस्कृतिक एकीकरण के सांस्कृतिक मार्ग विषय पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की व्याख्यानमाला में प्रोफेसर रजनीश शुक्ल ने यह बात कही।

वर्धा अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा कि आखिरी महाराजा हरि सिंह ने यदि भारत में विलय का निर्णय लिया तो उसका कारण राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक था। यह जरूरी हो गया है कि कश्मीर को जानने-समझने के लिए सांस्कृतिक पक्ष को आगे रखा जाए। संस्कृतियां जब ओझल हो जाती हैं, तो मानव समाज अंधेरे में चला जाता है। विश्वविद्यालय के कश्मीर अध्ययन केंद्र के कार्यक्रम में प्रोफेसर शुक्ल ने कहा कि मैं कश्मीर को सप्तसिंधु क्षेत्र कहूंगा। इसका महत्व भारत के एकीकरण के लिए अहम है। जम्मू-कश्मीर को अलग रूप से देखना, भारत को तोड़ने जैसा है। भारत का जो श्रेष्ठ है, उसका केंद्रीय स्थल कश्मीर रहा है। सप्त सिंधु क्षेत्र में एक तरफ सरस्वती है तो दूसरी ओर सिंधु है। इसी के बीच के क्षेत्र को हम शारदा क्षेत्र कहते हैं। हम जब अपनी संस्कृति से कटने लगते हैं तो पीओजेके हमें पीओके लगता है। हमें जम्मू-कश्मीर सिर्फ कश्मीर घाटी लगने लगता है।

घाटी ही कश्मीर नहीं है, बल्कि जम्मू-कश्मीर में वह एक घाटी है। इसी के चलते पूरे क्षेत्र में अलगाव की स्थिति पैदा हुई है। हम पीओके कहते हैं, इसे पीओजेके कहने की कोशिश हुई है, लेकिन इसमें पीओजेके एंड लद्दाख कहना होगा।

जम्मू-कश्मीर कभी भी भारत से अलग नहीं रहा : कुलदीप चंद

देहरा/धर्मशाला,(आपका फैसला)। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के कश्मीर अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर कभी भी भारत से अलग नहीं रहा और उसका विलय भी देश की अन्य रियासतों की तरह ही हुआ था, लेकिन हम किसी भी राज्य के लिए इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करते कि उसका भारत में विलय हुआ था। उन्होंने कहा कि हम बार-बार जम्मू-कश्मीर के विलय की बात करके यह गलती करते हैं और इससे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे जम्मू-कश्मीर पहले अलग था, जबकि हकीकत यह है कि वह हमेशा ही भारत का हिस्सा था। यही नहीं भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सलाहकार अग्निहोत्री ने पटियाला, मंडी समेत कई रियासतों का भी उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि ऐसी तमाम रियासतों का एकीकरण हुआ था, लेकिन हम जिक्र कश्मीर का ही करते हैं। इससे ही समाज में भ्रम पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि अकादमिक जगत को इस दिशा में शोध करने चाहिए ताकि संशय खत्म किया जा सकें। जब हम जम्मू कश्मीर के संदर्भ में बात करते हैं तो फिर हमें वहीं के लोगों से संवाद करना चाहिए। वर्तमान सरकार ने इस दिशा में प्रयास किए हैं, लेकिन अब तक की सरकारें मूल कश्मीरी लोगों की बजाया पाकिस्तान और बाहर से आए लोगों से बातें करती रही हैं। उन्होंने कहा कि हमें जम्मू कश्मीर में पैदा हुई समस्याओं के हल के लिए कश्मीर के लोगों से ही सीधी बात करनी चाहिए और उनकी ही राज्य में सबसे बड़ी हिस्सेदारी है। जम्मू कश्मीर के मुद्दे पर कई अहम पुस्तकें लिखने वाले अग्निहोत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर को लेकर कई भ्रम फैले हैं, लेकिन उन्हें दूर करने के लिए अकादमिक जगत से जरूरी प्रयास नहीं हुए, जिन्हें अब शुरू करना चाहिए। वहीं, कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं कुलपति प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल ने भी अपने संबोधन में जम्मू कश्मीर के विलय को लेकर फैले भ्रमों का जिक्र किया। आज भी जम्मू कश्मीर का एक ऐसा वर्ग हैए जो भारत से विलय को गलत परिप्रेक्ष्य में देखता है। उन्होंने कहा कि आर्टिकल 370 हटने से यह भ्रम दूर करने की दिशा में एक अहम कदम आगे बढ़ा है। इन प्रयासों को जारी रखने की जरूरत है।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

कश्मीर अध्ययन केंद्र
द्वारा आयोजित
संवैधानिक-अधिमिलन सप्ताह व्याख्यानमाला

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जम्मू-कश्मीर का संवैधानिक अधिमिलन: एकीकरण के विविध पक्ष

कार्यक्रम संरक्षक एवं मार्गदर्शक
प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल
माननीय कुलपति
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

वक्ता: प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री
सलाहकार, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
विषय: एकीकरण- भ्रम एवं तथ्य
26 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

गूगल मीट पर जुड़ें:
meet.google.com/mpe-xwii-inv

वक्ता: श्री आशुतोष भटनागर
निदेशक जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र
विषय: एकीकरण की समसामयिक बाधाएं
22 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

वक्ता: प्रोफेसर आशुतोष कुमार
राजनीति विज्ञान विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी
विषय: संवैधानिक अधिमिलन का राजनीतिक इतिहास
24 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

वक्ता: प्रो. डॉ. रजनीश शुक्ल
कुलपति, वर्धा अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
विषय: एकीकरण का सांस्कृतिक मार्ग
27 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

वक्ता: प्रोफेसर शांति श्री पंडित
रा. वि. विभाग, सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय
विषय: पाक प्रायोजित आतंकवाद एवं नरसंहार
23 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

वक्ता: प्रोफेसर जिगर मोहम्मद
इतिहास विभाग, जम्मू यूनिवर्सिटी
विषय: गुलाब सिंह के नेतृत्व में जम्मू कश्मीर
25 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

वक्ता: प्रो. नीरजा अरुण गुप्ता
कुलपति, सांची बौद्ध - भारतीय ज्ञान विश्वविद्यालय
विषय: एकीकरण का भाषायी मार्ग
28 अक्टूबर 2021
उद्घाटन सत्र: अपराह्न 3:00 बजे

कार्यक्रम निदेशक
डॉ. मलकीत सिंह
निदेशक, कश्मीर अध्ययन केंद्र

संयोजक
डॉ. जयप्रकाश सिंह
सहायक प्राचार्य
कश्मीर अध्ययन केंद्र

सह-संयोजक
संदीप कुमार सिंह
सहायक आचार्य
कश्मीर अध्ययन केंद्र